{ Class — M.A. Semester II
Paper — VI
पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा
(Western Epistemology) }

{ Class — T.D.C. Part I
Paper — II
तत्त्वमीमांसा (Metaphysics) } के लिए

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept of Philosophy
R.N. College,
Hajipur

Topic — अनुभववाद (Empiricism)

अनुभववाद
(Empiricism)

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में वैज्ञानिक पद्धति से ज्ञान-प्राप्ति पर बहुत अधिक बल दिया गया है। इसमें मध्य-युग के विश्वास एवं धर्मग्रन्थों पर आधारित ज्ञान की अवहेलना कर बौद्धिक विश्लेषण को महत्त्व दिया गया है। ज्ञान के स्रोत, सीमा आदि के निर्धारण में इस युग में वैज्ञानिकता एवं आधुनिकता का परिचय मिलता है। इसमें एक सिद्धान्त अनुभववाद (Empiricism) है। इसके अनुसार वह इन्द्रियों से प्राप्त होने वाला अनुभव ही समस्त ज्ञान का स्रोत है। इसलिए अनुभववादी विचारक ज्ञान को अनुभवाश्रित (a posteriori) मानते हैं। ज्ञान की प्राप्ति में बुद्धि निष्क्रिय होती है। अनुभव के आधार पर जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह सम्भावित है अर्थात् उसके खण्डन की पूर्ण सम्भावना बनी रहती है। अतः अनुभव के द्वारा सार्वभौम एवं निश्चित ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता।

आगमन प्रणाली (Inductive Method) के आधार पर 'कुछ' उदाहरणों से 'सब' के विषय में निष्कर्ष निकाले जाते हैं। जैसे — कुछ मनुष्यों को मरते हुए देखकर निष्कर्ष निकाला जाता है कि सभी मनुष्य मरणशील हैं। अनुभववादी विचारक बुद्धिवाद की आलोचना करते हुए कहते हैं कि आदर्श एवं भाव की स्थापना गणितीय प्रणाली से हो सकती है, किन्तु भौतिक संसार का ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव से ही हो सकता है। ज्ञान की सीमा अल्प है। किन्तु मानव उन्हीं वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, जो उसके इन्द्रियानुभव की सीमा में आते हैं। जन्म के समय मन कोरे कागज के समान होता है, उसमें किसी प्रकार के जन्मजात या सहज प्रत्यय नहीं होते। अनुभूति के द्वारा मन सरल प्रत्ययों या विचारों (Simple Ideas) को ग्रहण करता है और

जटिल प्रत्ययों (Complex Ideas) की रचना करता है। इस प्रकार ज्ञान का निर्माण होता है।

अनुभववाद के समर्थक ग्रेट ब्रिटेन के तीन प्रमुख विचारक हैं — (i) लन्दन के जॉन लॉक (John Locke) (ii) आयरलैण्ड के जॉर्ज बर्कले (George Berkeley) तथा (iii) स्कॉटलैण्ड के डेविड ह्यूम (David Hume)। लॉक ने सहज या जन्मजात प्रत्ययों के खण्डन द्वारा बुद्धिवादी विचारधारा को असंगत कहा है। उन्होंने सहज प्रत्ययों का खण्डन करते हुए कहा है कि यदि ये प्रत्यय सार्वभौम हैं, तो मूर्ख, पागल एवं बच्चों में भी इसका ज्ञान होना चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं होता। इसीप्रकार नैतिक विचार (जैसे-शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित आदि) आध्यात्मिक विचार (जैसे — आत्मा, ईश्वर आदि) — ये सभी जन्मजात नहीं होते। उन्होंने जन्मजात प्रत्यय या विचार का खण्डन किया है, किन्तु जन्मजात शक्ति का नहीं। उनके अनुसार एकमात्र अनुभव ही ज्ञान की प्राप्ति का साधन है। यह अनुभव संवेदन (sensation) एवं स्वसंवेदन (Reflection) के रूप में होता है।

बर्कले इन्द्रियों से प्राप्त अनुभव को ही ज्ञान का मूल आधार बतलाते हैं। उनके अनुसार इन्द्रियों से प्राप्त प्रत्यय या विचार के अतिरिक्त किसी जड़-तत्व की अनुभूति नहीं होती। अपने मन के अतिरिक्त, दूसरे व्यक्तियों के मन (सान्त्र मन) तथा एक अनन्त मन (ईश्वरीय मन) भी होते हैं। इसकी अनुभूति हमारे मन में होती है।

अनुभववाद के तीसरे प्रमुख विचारक ह्यूम ने भी समस्त ज्ञान का मूल स्रोत अनुभव को ही बतलाया है। किन्तु वे अनुभव के आधार पर जड़-तत्व, ईश्वर या आत्मा — किसी की सत्ता स्वीकार नहीं करते। लॉक ने जड़-तत्व को स्वीकार किया, किन्तु बर्कले ने जड़-तत्व का खण्डन करते हुए आत्मा एवं ईश्वर की सत्ता को अनुभव पर आधारित माना। ह्यूम इन सभी अनुभूतियों

का खण्डन करते हुए कहते हैं कि अनुभव के मूल में दो ही चीजें होती हैं — (i) संस्कार (Impression) तथा (ii) प्रत्यय (Idea)। संस्कार प्रथम भाव है जो प्रत्यक्षीकरण के साथ तीव्र गति से मन में प्रवेश करता है तथा प्रत्यय उसी का अस्पष्ट प्रतिरूप है जो चिन्तन में प्रयुक्त होता है।

समीक्षा — अनुभववादी विचारक ज्ञान की प्राप्ति में बुद्धि को निष्क्रिय बतलाते हैं। किन्तु आधुनिक मनोविज्ञान इस प्रक्रिया में बुद्धि को सक्रिय एवं गतिशील मानता है। ज्ञान की प्राप्ति एकमात्र अनुभव से नहीं हो सकती। बुद्धि को महत्त्व नहीं देना — ज्ञान के आधार पर प्रहार करना है। वस्तुतः संवेदनाओं का अर्थ बुद्धि के द्वारा ही लगाया जा सकता है।

इसप्रकार अनुभववादी विचार भले ही असंगत हो, किन्तु इस विचारधारा में तर्क की प्रधानता है तथा अनुभव की सीमाओं का निर्धारण किया गया है।

——————X——————X——————